गंगा - आकाशगंगा का प्रतीक

सनातन धर्म में **'गोविन्द'**, **'गायत्री'**, **'गो'** और **'गंगा'** नामों का भारी महत्व माना जाता है । चारों नामों में से **'गायत्री'**, **'गंगा'** एवम् **'गो'** के सम्बन्ध में एक लम्बे समय से समाज में भ्रान्ति चली आ रही है । इससे देश को भूतकाल में भारी हानि हुई है, और अभी भी हो रही है तथा आगे भी सम्भावना बनी रहेगी, अतएव निम्न पंक्तियों में 'गंगा' शब्द की वैज्ञानिक पृष्ठभूमि तथा **'गंगा'** **'आकाशगंगा'** की प्रतीक है, इस विषय पर प्रकाश डालने का प्रयास किया जा रहा है ।

1. ''गंगा नदी''- आकाशगंगा का प्रतीकः- हमारी आकाशगंगा में एक खरब से भी अधिक तारे (सूर्य) हैं । इन सूर्यों से हम सभी पर निरन्तर अनन्त शक्ति-कणों (Electro Magnetic Particles) की वर्षा होती रहती है, इस प्रकार से सूर्य हम सब पृथ्वीवासियों के लिए **'प्राण-उर्जा'** का स्रोत हैं। ***'ब्रह्माण्डीय -ऊर्जा'*** *(चुम्बकीय विद्युतकणों) की वर्षा का चित्र (P-261, Tao of Physics) से लिया गया है।* आकाशगंगा एक छोर से दूसरे छोर तक एक श्वेत नदी की भाँति फैली हुई है। ठीक उसी प्रकार **'गंगा-नदी'** भी हिमालय पर्वत के गोमुख से लेकर गंगासागर तक विस्तृत है तथा **श्वेत रूपिणी** भी है । भारत की संस्कृति का जन्म नदियों के किनारे हुआ था । सारे नगर एवम् ग्राम नदियों के किनारे ही बसाए जाते थे । इस प्रकार सभी नदियाँ विशेषकर गंगा भारत की जीवनधारा (Life-line) रही है । गंगा नदी का पानी सड़ता नहीं है । कहते हैं, कि गंगा हिमालय के उन भागों से होकर आती है, जहाँ पर उसमें विशेष औषधियाँ एवम् ओजोन (O_3) गैस का समावेश हो जाता है । जिसके कारण इसके पानी में न सड़ने का गुण पाया जाता है तथा स्नान करने पर अन्य नदियों की अपेक्षा अधिक शक्ति (**ओज**) की प्राप्ति होती है, अतएव इसे पाप-नाशिनी की संज्ञा भी दी गयी है। इन्हीं कारणों से इसे ***'आकाशगंगा' के प्रतीक*** के रूप में मान्यता दे दी गयी । इसे पूज्यनीय माना जाने लगा, परन्तु मुख्य स्रोत अर्थात् **'आकाशगंगा'** जो **'ब्रह्म का शरीर'** अथवा **'विराट पुरुष'** कहा गया है, उससे इसके जुड़ाव को भुला दिया गया, अतएव इसकी पूजा-अर्चना से **ओज** एवम् **तेज** की वृद्धि का जो लाभ मिलना चाहिए था, वह नहीं मिल पा रहा है । ***शिव पुराण में स्पष्ट शब्दों में***

ब्रह्माण्डीय ऊर्जा (शक्ति कणों) की वर्षा

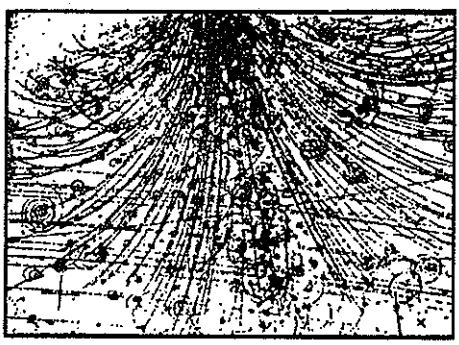

चित्र संख्या -1

लिखा है, कि भगवान शंकर अपने मस्तक पर आकाशगंगा को धारण करते हैं। (पृष्ठ-100, रुद्रसंहिता, प्रथम अध्याय, तेरहवाँ संस्करण, वि.सं. 2057, गीता प्रेस, गोरखपुर)

2. पौराणिकों द्वारा कथाओं का सृजनः- प्रतीकों के कोषागार से पौराणिकों ने कुछ प्रतीकों को चुनकर गंगावतरण के मिथक का सृजन कर डाला। इस कथा में राजा भगीरथ को मुख्य पात्र बनाकर **'पृथ्वी'** पर जीवन किस प्रकार अवतरित हुआ, यह बात बतलाने का प्रयास किया गया है, जबकि आज के वैज्ञानिक इस पहेली अर्थात् पृथ्वी पर जीवन किस प्रकार आया, की खोज में अभी भी लगे हुए हैं। कुछ लोग इस कथा को राजा भगीरथ एक कुशल इंजीनियर थे, बतलाकर गंगा की धारा को तिब्बत से भारत की ओर मोड़ लाने के अर्थ में लेते हैं, जो बेमेल है। ***तारों से विकीरण (Radiation) के द्वारा जीवनधारण करने के मूल कण एलेक्ट्रॉन, प्रोटॉन एवम् न्यूट्रॉन (Electron, Proton, Neutron) पृथ्वी पर पहुँचे, इस कथा का वैज्ञानिक अर्थ निकलता है। तत्पश्चात् जीवन धारण के रसायन (अमीनो एसिडों) का निर्माण अनुकूल परिस्थितियों में इन कणों द्वारा हुआ।*** जीवन अर्थात् आत्मा तो सदैव और सर्वत्र है, व्यापक है। वह न तो कहीं आती है, न जाती है, मात्र सही अनुपात में भौतिक कणों के मिलने से जीवन स्पन्दित होना आरम्भ हो जाता है। भगीरथ का अर्थ है- **'निरन्तर'** अर्थात् कि जब से सृष्टि बनी है, तभी से जीवन धारण के मूल कणों की वर्षा अनवरत रूप से होती आ रही है। राजा भगीरथ द्वारा गंगा को पृथ्वी पर लाने की कथा में बतलाया गया है, कि गंगा के पृथ्वी पर आने के पश्चात् राजा सगर के साठ हजार पुत्रों का उद्धार हुआ। कदाचित् ऐसा लगता है, कि पौराणिकों ने गणना करके यह पता लगाया होगा, कि निरन्तर (भगीरथ) **'ऊर्जा-कणों'** की वर्षा के कारण पृथ्वी पर हर क्षण साठ हजार जीवात्माओं का जन्म हो रहा है। इन बातों की वैज्ञानिकों द्वारा पुष्टि की जानी चाहिए।

गंगावतरण का प्रतीकात्मक चित्र

चित्र संख्या -2

पौराणिकों द्वारा वैज्ञानिक तथ्यों को रोचक कथाओं में पिरोया जाना भारतीय मनीषियों की श्रेष्ठ शैली रही है। **इन्हें आम जनता ने सत्य कथा मान लिया है।** अब जब इन कथाओं की वैज्ञानिक दृष्टि से चीर-फाड़ की जाती है, तो आस्था को धक्का लगना स्वाभाविक है, परन्तु जो वैज्ञानिक सत्य निकलकर सामने आते हैं, ***वे हमें बहुत ही चौंकाने वाले हैं, इन पर हमें गर्व होना चाहिए।*** पौराणिक कथा के अनुसार गंगा की उत्पत्ति भगवान विष्णु के चरणों (प्रोटॉन तारा समूह) से हुई है। इससे यह भाव निकलता है, कि गंगा के जल में प्रोटॉन कणों की विशेष रूप से मिलावट है। तुलसी को हरि प्रिया कहा गया

है, पीपल पर विष्णु का वास बतलाया गया है । इन बिन्दुओं पर खोज की जानी चाहिए।

अबोध भक्तों के द्वारा **"हर हर गंगे"** की आरती से भक्तिभाव तो जागृत हो सकता है, परन्तु सही दिशा के अभाव में लक्ष्यवेध होना असम्भव है, ऐसा मेरा मानना है, कारण कि भगवान राम की पत्थर की मूर्ति में हम भगवान राम की भावना करते हैं, तब हमें उनके दर्शन हो सकने की सम्भावना है, यह दिशा ठीक है। इसी प्रकार ***'गो' और 'गंगा' की पूजा के संदर्भ में भी हमें ऐसी ही भावना करनी चाहिए, कि हम मातृभूमि एवम् आकाशगंगा की पूजा कर रहे हैं, जो हम ठीक अर्थ न जानने के कारण नहीं कर रहे हैं ।***

3. भावी पीढ़ी के प्रति कर्त्तव्य:- चूँकि भावी पीढ़ी लगभग विज्ञान की पीढ़ी होगी और विज्ञान के विद्यार्थी बहुत ही खोजी प्रवृत्ति के होते हैं, अतएव वे हर विषय की तह तक जाकर जानकारी पाना चाहते हैं । आशा है, कि इस लेख की जानकारी समाज के हर घटक के लिए लाभकारी होगी और ***कथाओं और प्रतीकों में लिपटा वैदिक ज्ञान आज के युग की भाषा अर्थात् विज्ञान के शब्दों में ही बतलाने से नयी पीढ़ी के प्रति हम अपना ऋषि-ऋण चुका सकेंगे ।***

प्रतीकों से लाभ भी हैं तथा हानि भी, परन्तु संसार में ऐसी कोई योजना हो ही नहीं सकती जिसमें कुछ लाभ और कुछ हानि न हो, इसलिए ऐसा समझकर भारतवासियों को विशेषकर धर्म की दिशा-निर्देश करने वालों को स्वयम् जागना होगा तथा समाज को भी सही-सही मार्ग बतलाना होगा, नहीं तो ऐसा समय आ सकता है जब कि नयी पीढ़ी की **'धर्म'** पर सम्पूर्ण आस्था समाप्त हो जाये । ***ध्यान रहे, कि मूल प्रश्न वर्तमान पीढ़ी की आस्था भंग करने का नहीं है, अपितु भावी पीढ़ी को वैदिक ज्ञान हस्तान्तरित करने का है ।***

4. सारांश:- (अ) समग्र दृष्टि:- जब भी कभी मानव एकांश का दर्शन करेगा, तो उसका राह से भटक जाना स्वाभाविक है । आज समाज में भ्रान्तियाँ क्यों हैं, क्योंकि आज हमारी दृष्टि विशाल एवम् समग्रता पूर्ण नहीं रही है । विज्ञान हमें समग्रता का दर्शन कराता है, अतएव उपरोक्त विश्लेषण आज के युग की आवश्यकता है । ***विज्ञान विध्वंसात्मक नहीं है । हर वस्तु अथवा योजना का दुरुपयोग और सदुपयोग करना मानव की इच्छा पर निर्भर है ।*** यह प्रश्न विचारणीय हैं, कि जो बातें विज्ञान की कसौटी पर खरी नहीं उतरेंगी, वे बिना तेल के दीपक की भाँति स्वयं बुझ जायेंगीं । इससे मानवता का भारी अहित होगा । जो अब तक हुआ सो हुआ, पर अब तो देश तथा समाज की रक्षा करने का व्रत लेना ही पड़ेगा तथा समाज को भ्रान्तियों से मुक्त करना ही होगा । ***याद रहे, कि विज्ञान के बिना धर्म 'अंध-श्रद्धा' भर है, जो किसी प्रकार भी राष्ट्रहित में नहीं है ।***

5. प्रतीकों की रक्षा:- प्रतीकों की रक्षा करना हिन्दू संस्कृति की परम्परा रही है, अतएव यदि सरकार चाहे तो इन दोनों महत्वपूर्ण प्रतीकों अर्थात् **'गो'** एवम् **'गंगा'** को **'राष्ट्रीय-पशु'** तथा **'राष्ट्रीय-नदी'** घोषित करके उनकी मूल भावना के प्रचार में बहुत हद तक सार्थक सहायता कर सकती है । इस प्रकार प्रतीकों की मर्यादा भी बनी रहेगी तथा समाज में विज्ञान सम्मत चेतना का जागरण भी होगा ।

6. कल्कि अवतार:- हिन्दू ग्रंथों में कहा गया है, कि कलिकाल में भगवान अवतार धारण करके घोड़े पर सवार होकर आएंगे तथा तलवार से दुष्टों का विनाश करेंगे । परमाणु युग में कोई भी तलवार से तो शायद ही किसी का विनाश कर सके, परन्तु प्रतीक की भाषा में घोड़ा और तलवार के ***अर्थ तीव्र गति वाले 'विज्ञानसम्मत' तीक्ष्ण विचार ही उपयुक्त लगते हैं,*** क्योंकि अंधश्रद्धापूर्ण विचारों को वैज्ञानिक विचारों द्वारा ही काटा जा सकता है। **अतएव उपनिषदों के उद्घोष के अनुसार, हे बुद्धिजीवियो! जागृत! उत्तिष्ठ! वरान्निबोधात! जागो! उठो! और तब तक संघर्ष करते रहो, जब तक कि सत्य की विजय न हो जाये। अस्तु !**

हरि: ॐ तत् सत् !